❊ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ❊

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

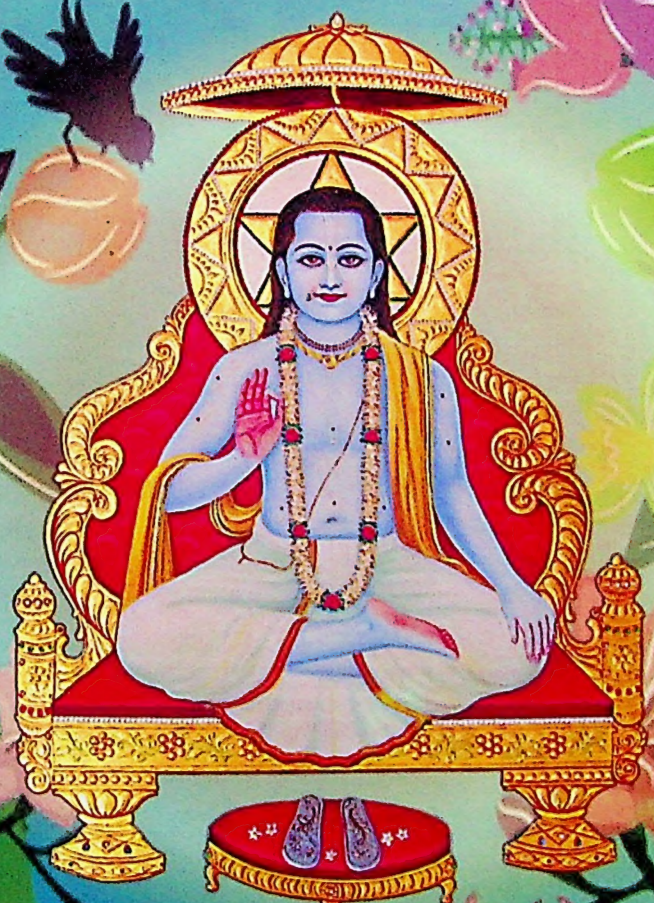

वेदान्तकामधेनु-दशश्लोकी

Vedantkamdhenu-Dashshloki

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

Shri Sarveshwaro jayati

श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य प्रणीत--

Composed and written by shri Sudarshan chakrawtar Adacharya Jagadguru shri Bhagawan Nimbarkacharya

वेदान्तकामधेनु-दशश्लोकी

Vedantkamdhenu--Dashshloki

संस्कृत व्याख्याकार एवं हिन्दीभाषानुवादक-

पं० रामगोपाल शास्त्री - निम्बार्कभूषण

साहित्य-धर्मशास्त्राचार्य, शिक्षाशास्त्री

शिक्षामन्त्री - अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

pt. shri Ramgopal shastri Nimbarkbhoosan

Sahitya dharmshastracharya, Shikshashastri, explainer in sanskrit and translator in Hindi, Shikshamantri A. Bha. shri Nimbarkacharyapeeth

अंग्रेजी भाषानुवादक--

श्रीमोहनलालजी केवलिया

प्राध्यापक (अंग्रेजी) राजकीय महाविद्यालय, जोधपुर (राज०)

shri Mohanlalji Kewalia

Professor [English] Govt. Jodhpur [Raj.]

Translator in English

चैत्र शुक्ल पूर्णिमा वि. सं. २०४९ श्रीहनुमज्जयन्ती १९ अप्रेल १९९२ शुक्रवार

प्रति :१००० न्यौछावर : १० रुपये

Chetra Shukla Poornima, Vikram Samvat 2049,

shri Hanuman Jayanti, 17th, April, 1992] Friday

Copy : 1000 Offer Rs.: 10

श्रीनिम्बार्कदर्शन - अनुशीलन

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ भारतीय दर्शनों में सर्वमान्य लोकप्रिय विश्व विश्रुत द्वैताद्वैत-दर्शन के तपस्वी एवं मनीषी आचार्यो की तपःस्थली रही है। यहाँ के समस्त आचार्यो ने अपने-अपने समय में तात्कालिक लोक कल्याणकारी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए जो अनुष्ठानरूप भगवदाराधना के दिव्य कर्म किये, उनकी बड़ी यशस्वी परम्परा है, उनका एक दिव्य इतिहास है।

उक्त परम्परा में वर्तमान आचार्यश्री अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के समय का इतिहास भी आचार्यपीठ की परम्परा में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। आपश्री ने निम्बार्क जगत् में भगवान् की आराधना और श्रीनिम्बार्क-दर्शन के प्रचार-प्रसार के साथ पीठ द्वारा पारमार्थिक विविध विधाओं के माध्यम से जो आचार्यपीठ के महत्व की प्रतिष्ठा की है, वह वर्णनातीत है।

साहित्य सृजन की दृष्टि से तो आचार्यपीठ का यह एक स्वर्णिम युग ही कहा जायेगा। परमपूज्य आचार्यश्री द्वारा जो विविध साहित्य सृजन की शृङ्खलाए चल रही हैं, वे अभूतपूर्व है। आपश्री द्वारा अनेक अप्राप्य एवं अप्रकाशित प्राचीन ग्रन्थरत्नों तथा स्वरचित ग्रन्थरत्नों के प्रकाशन के साथ आचार्यपीठस्थ विद्वानों को प्रसाद स्वरूप प्रेरणा प्रदान करके भी इस क्षेत्र में उत्तम कृतियों तथा पुरातन ग्रन्थों का सृजन करवाया जा रहा है।

प्रस्तुत ग्रन्थ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य प्रणीत ''वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी'' का संस्कृत-हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद पूज्य आचार्यश्री की सत्प्रेरणा का ही फल है। आचार्यपीठस्थ विद्वत्परिषद् के मूर्धन्य मनीषी पण्डित प्रवर स्वनामधन्य श्रीरामगोपालजी शास्त्री, साहित्य, धर्मशास्त्राचार्य, शिक्षा शास्त्री, पूर्व उपनिरीक्षक संस्कृत शिक्षा, राजस्थान, जयपुर का आचार्यपीठ से घनिष्ठतम सम्बन्ध रहा है। श्रीशास्त्रीजी की साहित्य सेवा का लम्बा इतिहास है। राजकीय सेवाकाल में भी आपका उक्त सेवा में अनुपम योगदान रहा है। किन्तु निवृत्ति के पश्चात् तो आप आचार्यपीठ के लिये पूर्ण समर्पित होकर

निरन्तर सर्वात्मना सर्वविध सेवा में संलग्न रहे। प्रस्तुत ग्रन्थ का संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद आचार्यश्री के मनोभाव के अनुसार सम्पादित किया। इससे पूर्व अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा रचित ''श्रीस्तवरत्नाञ्जलि'' ग्रन्थ का भावानुसारी हिन्दी अनुवाद किया गया।

निम्बार्क सम्प्रदाय में मन्त्रराज का अनुष्ठान (आराधना) प्रमुख है। अतः श्रीशास्त्रीजी द्वारा ''मन्त्रराज-जपविधि'' नामक मौलिक ग्रन्थ की रचना करके निम्बार्कानुयायियों का महान् उपकार किया है। ''श्रीगोपालसहस्रनाम'' स्तोत्र वैष्णव मात्र का परम धन है। इसका शास्त्रीय मान्य प्रयोगों के साथ गोपालसहस्र नामावली सहित सम्पादन करके वैष्णव जगत् के लिए उक्त ग्रन्थ को सुलभ करवाया। निम्बार्कसहस्रनाम स्तोत्र का सम्पादन एवं इसकी नामावली का सम्पादन भी आपका महत्वपूर्ण प्रयास है।

पण्डितराज श्रीअनन्तराम विरचित ''तत्त्वसिद्धान्तबिन्दु'' अनुवाद एवं सम्पादन के साथ 'प्रवेश' शीर्षक से जो प्रारम्भिक भूमिका दी है, उसमें द्वैताद्वैत दर्शन सम्बन्धी अनेक तात्त्विक विषयों का विवेचन करते हुए श्रीशास्त्रीजी ने अपने अद्भुत वैदुष्य का परिचय दिया।

जयपुर नगर में श्रीसर्वेश्वर संसद् की स्थापना और उसके विकास में श्रीशास्त्रीजी का प्रशंसनीय योगदान रहा। संसद् की स्मारिका के रूप में ''श्रीनिम्बार्क सुधा'' नामक ग्रन्थ का सम्पादन भी श्रीशास्त्रीजी के प्रयास का फल है। इसी प्रकार अनेक ग्रन्थ एवं पत्र-पत्रिकाओं में आपके शास्त्रीय प्रामाणिक लेख प्रकाशित होते रहे हैं। जयपुर से प्रकाशित होने वाली ''भारती'' नामक संस्कृत पत्रिका के प्रकाशन में श्रीशास्त्रीजी का सक्रिय योगदान था। आचार्यपीठ सम्बन्धी समस्त धार्मिक गतिविधियों स्थानीय उत्सव-महोत्सवों, विशिष्ट सभाओं, कुम्भ पर्वो सम्मेलनों, महासम्मेलनों में शास्त्रीय प्रवचनादि में श्रीशास्त्रीजी सदा अग्रणी रहे।

प्रस्तुत ग्रन्थ ''वेदान्तकामधेनु दशश्लोकी'' का संस्कृत-हिन्दी व्याख्या श्रीरामगोपालजी शास्त्री की एक अन्तिम अनुपम सेवा है। जीवन के अन्तिम क्षणों तक श्रीशास्त्रीजी की सारस्वत सेवा अगाधगति से होती रही है। अभी कुछ दिवस पूर्व ही आपने ''श्रीराधापञ्चाशिका'' का प्रणयन कर

आचार्यश्री के समक्ष उक्त ग्रन्थ को प्रस्तुत किया जो अभी जिसका आचार्यपीठ द्वारा मुद्रण कराया गया।लिखते हुए हार्दिक वेदना है कि श्रीशास्त्रीजी दि० १४/४/९२ को चिकित्सालय में रुग्ण शय्या पर भी सरस्वती की आराधना के रूप में लेखन करते-करते ही परमधामवासी होगये और अपनी अमरकृतियों की छाप छोड़ गये। विधि का विधान बड़ा ही विचित्र है। यहाँ किसी का वश नहीं। किन्तु--''स जातो येन जातेन याति वंश-सम्मुन्नतिम्।''

भारतीय एवं पाश्चात्य अंग्रेजी विद्वानों को भी भगवन्निम्बार्काचार्य के दर्शन का तात्त्विक ज्ञान प्राप्त हो सके। इस भाव से पूज्य आचार्यश्री की सत्प्रेरणा से ही जोधपुर निवासी स्व. प्रो. श्रीमोहनलालजी केवलिया ने अपने द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित एवं सम्पादित ''राधामाधव'' पत्रिका में भगवन्निम्बार्काचार्य प्रणीत ''वेदान्तकामधेनु-दशश्लोकी'' का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित करवाया। केवलियाजी को वाणी ग्रन्थों का भी गम्भीर अनुशीलन था। अंग्रेजी की ''राधामाधव'' पत्रिका में स्वयं के सम्पादकत्व में प्रकाशित अंगेजी अनुवाद प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रकाशित करवाया गया है। जो अंग्रेजी के विद्वानों के लिए लाभकारी सिद्ध होगा। ऐसा विश्वास है।

''वेदान्तकामधेनु-दशश्लोकी'' पर संस्कृत-हिन्दी और अंग्रेजी में दिया गया निम्बार्क-दर्शन अनुशीलन तीनों भाषाओं के दार्शनिक पथिकों के लिए एक अनुपम पथ प्रदर्शक सिद्ध होगा--ऐसा विश्वास है।

श्रीचरणकमलचञ्चरीक--

दयाशंकर शास्त्री

साहित्य-पुराणाचार्य

सेवानिवृत्त-प्राचार्य

सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय,ब्यावर-राजस्थान

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य

इस धराधाम पर जब-जब भी धर्म ग्लानि और अधर्म का प्राबल्य होता है, तब-तब जगन्नियन्ता सर्वेश्वर कभी श्रीराम रूप में तो कभी श्रीकृष्ण रूप में तथा श्रीनृसिंह-वाराह आदि रूपों में अवतीर्ण होते हैं अथवा अपने विशिष्ट पार्षदों को भी अपनी अहैतुकी कृपा से समादिष्ट कर भूतल पर अज्ञानान्धकार के निवारण हेतु प्रेषित करते हैं।

द्वापरान्त में कलियुग के आगमन पर निशाचरी वृत्ति का अतिशय आधिक्य होने पर उसके परिहार हेतु सर्वान्तर्यामी भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने ही श्रीकरारविन्द में सर्वदा सुशोभित चक्रराज श्रीयुदर्शन को--

सुदर्शन महाबाहो ! कोटिसूर्यसमप्रभ!।
अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णो मार्गं प्रदर्शय ।।

इस प्रकार आज्ञा प्रदान की। वे ही श्रीसुदर्शन आज से पञ्चसहस्त्र वर्ष पूर्व भारत की पावन धरित्री पर दक्षिण क्षेत्र में गोदावरी के सुरम्य तट पर अवस्थित वैदुर्यपत्तन वर्तमान में पैठन के निकट मूंगी ग्राम में अरुण मुनि के आश्रम में माता जयन्ती की कुक्षि से मनुज रूप में अवतीर्ण होकर नियमानन्द नाम से सम्बोधित हुये। बाल्यकाल में ही आप माता-पिता सहित व्रजभूमि में पधार कर श्रीगोवर्धन की उपत्यका में अपने आराध्य की उपासना की। देवर्षि श्रीनारद द्वाराआपको पञ्चपदीविद्यात्मक श्रीगोपालमन्त्रराज का उपदेश एवं श्रीसनकादि महर्षि संसेवित दक्षिणाचक्रवर्ती शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्राप्त हुई। सृष्टि रचयिता ब्रह्मा ने परीक्षा हेतु दिवाभोजी यति का छद्म रूप धारण कर सूर्यास्त के समय आपके आश्रम में पधार कर शास्त्रीय चर्चायें की। जब चक्रावतार श्रीनियमानन्द ने उनको भगवत्प्रसाद के लिए आग्रह किया तो सूर्यास्त का समय उपस्थित देख भोजन के लिये निषेध किया। श्रीनियमानन्द ने अपने ही चक्रराज श्रीसुदर्शन के दिव्य तेज स्वरूप को निकटस्थ निम्बवृक्ष पर सूर्यरूप में प्रदर्शित कर यति को यथेष्ट भगवत्प्रसाद कराया। यति के आचमन करने पर जब आपश्री ने चक्रराज के दिव्य तेज-पुञ्ज को तिरोहित कर लिया तब अन्धकार युक्त रात्रि का अवलोकन कर यति रूप ब्रह्मा को अतीव विस्मय हुआ और समाधिस्थ होकर ध्यान करने पर चक्रराज श्रीसुदर्शन के अवतार का

अनुभव कर प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हो नियमानन्द को निम्बार्क नाम से सम्बोधित किया। निम्बे अर्थात् नीम के वृक्ष में अर्क अर्थात् सूर्य का आपने दर्शन कराया इसीलिए आप निम्बार्क नाम से ही परम विख्यात होंगे। इस प्रकार ब्रह्मा कहकर अन्तर्धान हो गये। तभी से आप समस्त लोक में निम्बार्क नाम से प्रसिद्ध हुए।

भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य ने वेदान्त-दर्शन पर अद्‌भुत भाष्य की रचना करके जो दिव्य दिशा प्रदान की वह अनुपम है। आपका दार्शनिक सिद्धान्त स्वाभाविक द्वैताद्वैत है। और भगवान् श्रीराधाकृष्ण की रसमयी आपकी श्रीवृन्दावन निकुञ्ज रस भाव परक अनुपम उपासना है। प्रस्तुत ''वेदान्त-कामधेनु-दशश्लोकी'' ग्रन्थ गागर में सागर है। दशश्लोकी में आपने सब कुछ समाविष्ट कर दिया है। ''दशश्लोकी'' पर आचार्यप्रवर श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी महाराज ने ''वेदान्तरत्नमञ्जूषा'' नामक सुविख्यात व्याख्या भाष्यरूप में रचकर जिस तत्त्व का निरूपण किया। विद्वज्जनों के लिये सर्वदा मननीय है।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज की सत्प्रेरणा एवं भावना के अनुसार जैसा भी कुछ हो सका सुधीजनों एवं निम्बार्क सिद्धान्त पिपासुओं के लिये इससे सुलभता मिलेगी ऐसा मैं अनुभव करता हूँ।

श्रीसर्वेश्वरानुग्रहबुभुक्षुः--

पं० रामगोपाल शास्त्री

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

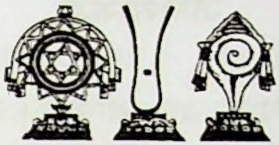

॥ जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य प्रणीत--

वेदान्त-कामधेनु दशश्लोकी

"श्रीगोविन्दं गुरुं नत्वा पीत्वाऽऽचार्य-कृपा-सुधाम्।
श्रीनिम्बार्कस्य वेदान्त--कामधेनुं समाश्रये ॥"

चित्स्वरूपम्

(१)

ज्ञानस्वरूपं च हरेरधीनं शरीर-संयोग-वियोग-योग्यम्।
अणुं हि जीवं प्रतिदेहभिन्नं ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्तमाहुः ॥

जीवो ज्ञानस्वरूपः। ज्ञानं स्वाभाविकं चैतन्यं नित्यं स्वयंज्योतिश्च। यथा घनीभूतो लवणो बाह्याभ्यन्तरतो रसमयस्तथेदं सर्वतोऽवतिष्ठते। जलमयोऽपि समुद्रो जलस्याधार इव जीवो ज्ञानाश्रयोऽपि वर्तते। अतोऽयमहमर्थ-रूपेण ज्ञाता, कर्त्ता, भोक्ता चेति। ज्ञानं धर्मः ज्ञाता धर्मी। धर्मिधर्मयोरविनाभाव- सम्बन्धः। यथा सूर्यप्रभा सूर्यास्ते पृथगवस्थातुं न शक्नोति, तथा धर्म-धर्मिरूपयोः ज्ञानत्वज्ञातृत्वयोरप्यविनाभावः सम्बन्धः। ज्ञाता ज्ञानेन प्रकाशते। देहेन्द्रियमनोबुद्धि-प्राण-विलक्षण एष हरेरधीनः। अतः सर्वक्रियाकलापेषु परतन्त्रसत्तावान्। अणु-परिमाणः। अतोऽतीन्द्रियः। शरीरेण संयोग-वियोग-योग्यः। प्रतिदेहं भिन्नः। असंख्याकश्च। इति वेदान्त-वाक्यानि

महर्षयश्च समुपदिशन्ति।

जीवस्वरूप

जीव ज्ञान स्वरूप है। ज्ञान स्वाभाविक चैतन्य, नित्य और स्वयं ज्योति है। जिस प्रकार लवण बाहर और भीतर से रसमय है उसी प्रकार यह ज्ञान भी सब ओर है। जैसे जलमय भी समुद्र जल का आधार है, वैसे ही जीव ज्ञान का आश्रय है। अतः यह "अहम्" के अर्थ के रूप में ज्ञाता, कर्त्ता और भोक्ता भी है। ज्ञान धर्म है। ज्ञाता धर्मी है। धर्म और धर्मी का अविनाभाव सम्बन्ध होता है। जिस प्रकार सूर्यप्रभा सूर्य से पृथक् नहीं रह सकती, उसी प्रकार धर्म व धर्मिरूप ज्ञानत्व व ज्ञातृत्व का भी अविनाभाव सम्बन्ध है। ज्ञाता ज्ञान से प्रकाशित होता है। देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि और प्राण से विलक्षण यह जीव श्रीहरि के अधीन है। अतः सभी क्रियाकलापों में परतन्त्र है। परिमाण में अणु अतीन्द्रिय, शरीर के साथ संयोग व वियोग के योग्य, प्रतिदेह में भिन्न और अनन्त जीव हैं-ऐसा वेदान्त वाक्य व महर्षिजन उपदेश करते हैं।

Life force

Explaination--

Numberless are the souls know ledge in essenee,
They acceot the bodies and leavr them,
Infinitesimal and separate in each body]
Depending on Lord Hari and possessing the knowledge.

Jivatama [self] is irradiating with knowledge, at no time it is free but regulated and controlled at all moments in all its movements and activities by the will of the Almighty Lord Sarveshwar [Radha Krishna]; its size has been calculated to be more subtle than even a one hundredth part of a one hunderdht part a hair,s point; it assumes multiforms when swayed py the spell of the perverted Nature [Maya]; the time for its redemption comes when the veil of ignorance is removed; Jivatma is different in different bodies: the Vedas and the Rishies speak of Jivatma as infinite in number.

(२)

अनादि-माया-परियुक्तरूपं त्वेनं विदुर्वै भगवत्प्रसादात्।
मुक्तं च बद्धं किल बद्ध-मुक्तं-प्रभेद-बाहुल्यमथापि बोध्यम्॥

जीवस्य धर्मभूतं ज्ञानं संकोच-विकासार्हम्। बद्धावस्थायां तस्य संकोचः, मुक्तौ च तद्विकासः। संकोचः कर्मतारतम्य-प्रयुक्तः। एवमनादि-कर्मात्मिकया मायया (प्रकृत्या) ज्ञानं घटावृतो दीप इव परिवेष्टितं भवति। अतो जीवस्वरूपं न परिज्ञायते। अनेकजन्मानन्तरं भगवत्प्रसादादेव ज्ञातुं शक्यते। बद्ध-मुक्त-भेदाद् द्विविधौ जीवो बुभुक्षु-मुमुक्षु-प्रभृति-प्रभेद-बाहुल्ये विभक्तः।

धर्मी जीव का धर्मभूत ज्ञान संकोच व विकास के योग्य है। बद्धावस्था में कर्मो की सत्ता के कारण उसका संकोच तथा मुक्तावस्था में कर्मो का अभाव होने से विकास हो जाता है। बद्धावस्था में ज्ञान के संकोच का यह अभिप्राय नहीं है कि 'सभी जीव अज्ञ हो जाते हों।' क्योंकि यह कर्मो के तारतम्य से होता है। इस प्रकार अनादिकर्मात्मिका माया (प्रकृति) से ज्ञान घटावृत दीप के समान घिरा हुआ होजाता है, अतः जीव के स्वयं ज्योतिष्ट्व स्वरूप अर्थात् ज्योति स्वस्वरूप का अनुभव नहीं होता। इससे यह अर्थ नहीं समझ लेना चाहिये कि "गुण प्रवाह अनादि होने से जीव के स्वरूप का ज्ञान कभी नहीं होगा", क्योंकि अनेक जन्म तक साधन (भगवदाराधन) में लगे रहने से दैन्यादि होने पर जब भगवत्कृपा होती है, तभी जीव के स्वरूप का परिज्ञान होजाता है। बद्ध और मुक्त भेद से दो प्रकार का भी यह जीव बुभुक्षु आदि अनेक भेदों में विभक्त है।

Explaination--

Beginningless in the soul mixed with Maya,
Only by God's grace can he know his self,
Various are the kinds of souls but chief are three,
Bound, ever emanciqated and bound-liberated.

Thus subjected to Maya [earthen veil] since continuous innumerable births, Jivatma [life force] can realise its true identity

[Swarup] only by the grace of God. Jivatma is either unbound [mukt], being unrelated with the spell of the effect of the earthen veil [Maya] i. e., governance of duties; or Semibound [Mumukshu], owing to to be a bit related with the spell of perverted nature [Maya] and it [Jee] is further devided in innumereble stages of birth according to the differences of duties.

(३)
अचित्स्वरूपम्

अप्राकृतं प्राकृतरूपकं च कालस्वरूपं तदचेतनं मतम्।
माया-प्रधानादि-पद-प्रवाच्यं शुक्लादिभेदाश्च समेऽपि तत्र ।।

यच्चेतन-विजातीयम्, यत्र ज्ञातृत्वादि नास्ति, तदचेतनम्। तत्त्रिविधम् अप्राकृतं प्राकृतं कालस्वरूपं चेति। तत्र मायाप्रधानादिपदैरभिधीयमानं गुणत्रयाश्रयं प्राकृतम्। गुणाश्च सत्त्व-रजस्तामांसि। तेषु शुक्लं ज्ञानादिकारणं सत्त्वम्। लोहितं लोभादिकारणं रजः। कृष्णं प्रमादादिकारणं तमः। इदमेव गुणत्रयाश्रयीभूतं द्रव्यं साम्यावस्थापन्नं सत् प्रधानादि-शब्दप्रवाच्यं भवति। ब्रह्माण्डान्तर्गत-चतुर्दशभुवनान्यपि पञ्चीकृत-पञ्चमहाभूतारब्धत्वात् प्राकृतान्येव। **कालः** प्राकृतादप्राकृताच्च भिन्नो नित्यो विभुश्च। अयं भूत-भविष्यद्-वर्तमानादिव्यवहार हेतुः सर्ग-प्रलययोर्निमित्तं च। प्राकृत-काल-विलक्षणं प्रकाशात्मकमादित्यवदनावरकस्वभावं तमसः परस्ताद्-वर्तमानं नित्यधामादि-अप्राकृतम्।

जगत् स्वरूप

जो चेतन (ज्ञान स्वरूप) नहीं है, जिसमें ज्ञातृत्व (ज्ञातापन) आदि नहीं है, उसे अचेतन कहते हैं। वह तीन प्रकार का है--अप्राकृत, प्राकृत और काल स्वरूप। इसमें "माया", "प्रधान" आदि शब्दों से कहा जाने वाला तीनों गुणों का आश्रय प्राकृत रूप अचेतन होता है। सत्त्व, रज और तम ये तीन गुण हैं। इनमें शुक्लवर्ण तथा ज्ञानादि का कारण "सत्त्व" होता है। रक्तवर्ण

व लोभादि के कारण को ''रज'' कहते हैं। कृष्ण वर्ण व प्रमादादि के कारण भूत गुण का नाम ''तम'' है। इन्हीं तीनों गुणों का आश्रयीभूत द्रव्य साम्यावस्था को प्राप्त होता हुआ ''प्रधान'' आदि शब्दों का वाच्य होता है। ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत चौदह भुवन भी पञ्चीकृत पञ्च महाभूतों से आरब्ध होने (बनने) के कारण प्राकृत ही हैं। **काल** प्राकृत व अप्राकृत से भिन्न, नित्य एवं विभु (व्यापक) है यह भूत, भविष्य व वर्तमान आदि व्यवहार का हेतु तथा सृष्टि व प्रलय का निमित्त कारण होता है। प्राकृत व काल से विलक्षण, प्रकाशात्मक, सूर्य के समान जो किसी से ढका न जा सकता हो ऐसा अन्धकार से परे वर्तमान नित्य धामादि **अप्राकृत** अचेतन कहा जाता है।

Universal force

Explaination--

Non phenomenal is the abode of the Lord,
Phenomena, efflects and time are all insentient,
Prakrti called Maya Pradhan has three qualities,
Sattva, Rajas and tamas with, colours white, red and yellow.

The non-conscious [Achetan] element is constituted of non-terrestrial, terrestrial and time [Kal], Lokas [worlds] like Vaikunth and others which are eternal, sublime, unique and enlightened are nonterrestrial; they differ from the other two elements viz, terrestrial and Time [kal]. The whole cosmos resulting from the three attributes of Sat, Raj and Tam is terrestrial [Prakriti] and is also known as Maya. The third element is Time which is signified by past, present and future.

(४)

ब्रह्म-स्वरूपम्

स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोषमशेषकल्याणगुणैकराशिम् ।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ।।

यतःस्वभावेनैवाऽविद्याऽस्मिता-राग-द्वैषाऽभिनिवेशाख्याः क्लेशाः

जन्माऽस्तित्व-वृद्धि-परिणामाऽपक्षय-मरणात्मका विकाराः, प्राकृतगुणास्त-त्कार्यभूताश्चाऽनन्ता बद्ध क्षेत्रज्ञ-धर्माः सर्वेऽपि दोषा निरस्ताः। यश्च सर्वकल्याणानां मोक्ष-प्रदातृत्वादीनामनन्ताऽचिन्त्य-स्वाभाविकगुणानां ज्ञान-शक्ति-बलैश्वर्यादीनां चैको मुख्यो राशिः। ''वासुदेव-संकर्षण-प्रद्युम्नाऽनिरुद्धभेदेन चतुर्विधो व्यूहः, अवतारो नाम स्वेच्छया धर्म सस्थापनार्थम्, अधर्मोपशमनार्थं स्वीयानां वाञ्छापूर्त्यर्थं च विविध-विग्रहै-राविर्भावः'' एवं व्यूहा अवताराश्च यस्याऽङ्गानि। यश्च ध्यातृणां मनोहरः पापहारकश्च। एतादृशः कमलोपमनेत्रः, सौन्दर्यसीमातिशायी, स्वरूपगुणादि-भिर्निरतिशयो महान् परब्रह्मशब्दामिधेयः, स्वरूपेण दिव्यमङ्गलविग्रहेण च आब्रह्मसुरनरादिनिखिलजीवसमूहै स्तैर्वरणीयः श्रीकृष्ण एव। तं वयम् (अनन्ता जीवाः) ध्यायेम ।

ब्रह्मस्वरूप

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश नाम के क्लेश जन्म, अस्तित्व, वृद्धि, परिणाम, अपक्षय व मरणात्मक विकार त्रिगुणात्मिका प्रकृति से सम्बन्ध रखने वाले गुण तथा उनके कार्यभूत बद्धजीवों के अनन्त धर्म ये सभी दोष जहाँ से स्वतः ही दूर रहते हैं ,जो मोक्षप्रदातृत्वादि सभी कल्याणों व अनन्त, अचिन्त्य, स्वाभाविक ज्ञान, शक्ति, बल, ऐश्वर्य आदि गुणों का एक मुख्य निधि (खजाना) है। वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न व अनिरुद्ध भेद से चारों व्यूह एवं विविध अवतार जिसके अङ्ग हैं। जो ध्यान करने वालों के मन को अपनी ओर आकृष्ट करने वाला एवं पापों का नाश करने वाला है। ऐसा कमलनयन, सौन्दर्यसीमातिशायी, स्वरूप गुण आदि से अत्यन्त महान्, ''परब्रह्म'' शब्द से वाच्य, सौन्दर्य, सौकुमार्य, माधुर्य, लावण्य आदि दिव्य मङ्गल विग्रह स्वरूप होने के कारण ब्रह्मा से लेकर समस्त सुरनरादि जीव समुदाय के लिये वरण योग्य (उपासनीय) श्रीकृष्ण ही है। हम सभी जीव उसका ध्यान करें।

Supreme power

Explaination--

We meditate on Lord Krsna,

Having lotus eyes and free from all defects,

By nature and Repository of divine qualities,
Lord Vasudeva in Chaturyuha and worrhy of worship.

We meditate Lord Krishna who is sublime by nature; beyond the perversion of nature, is an embodiment of all virtues; Vasudeo, Shankersan, Pradumna and Aniruddh are His four parts manifestations; is lotus-eyed and absolves us of all our sins and is adored by all as the Highest, All pervasive and All controller Brahma.

(५)

अङ्गे तु वामे वृषभानुजां मुदा विराजमानामनुरूपसौभगाम्।
सखीसहस्रैः परिसेवितां सदा स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदाम्॥

अस्यैव परब्रह्मणः श्रीकृष्णस्य वामाङ्गे विराजमाना। तदनुरूपसौभगा परमाऽऽह्लादिनी वृषभानुनन्दिनी श्रीराधिका मोदते। इयमपरिमिताभिः सखीभिः सेव्यते। सर्वेभ्यश्च भक्तेभ्यः पुरुषार्थचतुष्टयं तत्तदिच्छानुसारेण ददाति। ईदृशीं वेदमातृस्वरूपां दिव्यां श्रीराधिकां वयं (अनन्ता जीवाः) सदा स्मरेम। अनयोः (श्रीराधाकृष्णयोः) नित्यसम्बन्धः प्रेमोत्कर्षश्च श्रुतिभिः प्रतिपाद्यते। "राधा कृष्णात्मिका नित्यं कृष्णो राधात्मको ध्रुवम्" इति ब्रह्माण्डे, "येयं राधा यश्च कृष्णो रसाब्धिर्देहश्चैकः क्रीडनार्थं द्विधाऽभूत" इत्यथर्ववेदे, "यः कृष्णः सापि राधा च या राधा कृष्ण एव सः। अनयोरन्तरादर्शी संसारान्न विमुच्यते" इति च ब्रह्मसंहितायां समुपदिष्टवचोभिः श्रीराधाकृष्णयोरैक्यं सम्मिलितयोरेव चानयोः परब्रह्मत्वमिति बोध्यम्।

इन्हीं परब्रह्म स्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण के वाम भाग में विराजमान, उन्हीं के अनुरूप सौन्दर्यशालिनी परमाह्लादिनी श्रीवृषभानुनन्दिनी परब्रह्मस्वरूपा श्रीराधिका प्रमुदित हो रही है। यह असंख्य सहचरी परिकर से संसेवित है। सभही भक्तों के लिये पुरुषार्थचतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) उनकी अभिलाषा के अनुसार प्रदान करती हैं। ऐसा वेदमातृस्वरूपा श्रीराधिकाजी का हम सब जीव सदा स्मरण करें।

श्रीराधाकृष्ण युगल का नित्य सम्बन्ध व प्रेमोत्कर्ष श्रुतियों में वर्णित है। राधा को कृष्णस्वरूपा व कृष्ण को राधास्वरूप माना है। अतः दोनों का ऐश्वर्य ऐक्य व परब्रह्मत्व शास्त्रसिद्ध समझना चाहिये।

Explaination--

Werecollect Sri Radha equal in beauty and sweetness,
Seated happily on the left side Lord,
Always Served by thousands of female companions,
Fulfilling all the wishes of the devotees.

We meditate along with Lord Krishna His Power of Pleasure [Alhadini shakti] who is decking Him on His left and is in an ecstasy; She is the Darling of Vrishbhan who possesses the same attributes and beautiy as Her Lord and is surrounded by multitudes of Sahacharias [Damsels] who are attending upon the Couple [Radha Krishna] and who geants all our desired objects wordly as well as other wordly.

(६)

उपासना

उपासनीयं नितरां जनैः सदा प्रहाणयेऽज्ञानतमोऽनुवृत्तेः।
सनन्दनाद्यै र्मुनिभिस्तथोक्तं श्रीनारदायाऽखिलतत्त्वसाक्षिणे ।।

उक्त लक्षणं परं ब्रह्म सर्वजनैः सदा कालव्यवच्छेदं विना गङ्गाप्रवाहवन्निरन्तरम्) उपासनीयम्। अत्र वैदिकोपासने त्रैवर्णिकः पौराणिकोपासने च चतुर्थोऽपि वर्णोऽधिकारीति बोध्यम्।

अनादिमायाकर्माख्यमज्ञानमेव भगवत्स्वरूपादि-ज्ञान-तिरोधानस्वभावकत्वात्तमः। तस्य जीवेन सह यः सम्बन्धः स एव श्रीराधासर्वेश्वर-युगल-प्राप्ति-प्रतिबन्धकः। एतस्यैवाऽज्ञानतमोऽनुवर्तनस्यनाशाय तदुपासना विधेया। इदमेवोपासनायाः प्रयोजनम्।

तदिदं सनन्दनाद्यैर्मुनिभिःसर्वतत्त्व साक्षिणेऽस्मद्गुरवे श्रीनारदाय

समुपदिष्टम्। तेन च मह्यं यदुपदिष्टं तदेव मयाऽपीहोक्तमिति। अनेन सम्प्रदाय-स्याऽनादित्वं वैदिकत्वं च सिद्ध्यति।

उपासना

परब्रह्म श्रीराधाकृष्ण की सभी को सदा गङ्गा प्रवाह के समान निरन्तर उपासना करनी चाहिये। यह दो प्रकार की होती है--वैदिक और पौराणिक।

अनादि माया (प्रकृति) के कर्म (रागद्वेषादि, काम-क्रोध-लोभ-मोहादि) का ही नाम अज्ञान है। वह भगवत्स्वरूपादि के ज्ञान को ढक देता है, अतः तमोरूप है। इसी अज्ञानान्धकार का जीव के साथ में जो सम्बन्ध है, वह श्रीराधाकृष्णयुगल की प्राप्ति नहीं होने देता। अतः उक्त अज्ञानरूपी तम का विनाश करने के लिये उपासना करनी चाहिये, जिससे युगल ब्रह्म की प्राप्ति हो सके। यह ही उपासना का प्रयोजन है।

यह सब कुछ सनन्दनादि मुनियों ने सर्वतत्त्वसाक्षी हमारे गुरुवर्य्य देवर्षि श्रीनारदजी को उपदेश दिया था तथा श्रीनारदजी ने हम को जो उपदेश दिया, वह युगल उपासना का स्वरूप, प्रयोजन व सिद्धान्त हमने यहाँ उपासकों के हितार्थ कहा है। इस इतिहास व गुरु परम्परा से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का अनादित्व व वैदिकत्व सिद्ध होता है।

Worshiping

Explaination--

Let all worship Lord Sri Radha Krsna,
Always to destroy ignorance,
Thus spake Sri Sanaka brothers to sri Narada,
Who is well-versed in all knowledge.

In order to tear asunder the thick veil of ignorance and also to free the self from all torments, the aspirants should meditate the Couple [Radha Krishna] sansintermission; the chief preceptors Sankadik Rishies also instructed shri Narad [Himself an adept in all religious sciences] in the adoration of the Couple.

(७)

ब्रह्मात्मकता - द्वैताद्वैततत्त्वम्

सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकं श्रुतिस्मृतिभ्यो निखिलस्य वस्तुनः।
ब्रह्मात्मकत्वादिति वेदविन्मतं त्रिरूपताऽपि श्रुति-सूत्र-साधिता॥

क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-प्रकृति-पुरुष-क्षराक्षरादि-शब्दाभिधेय-चेतना-चेतन-रूपस्य सर्वस्याऽपि जगतः ब्रह्मात्मकत्वात् परब्रह्मणः श्रीसर्वेश्वरस्य च विश्वान्तरात्मत्वात् सर्वमपि विज्ञानं निश्चयेन यथार्थमेव। भोक्ता, भोग्यं, नियन्ता चेति त्रिरूपताऽपि श्रुति-सूत्र-साधितत्वाद् यथार्थैव। अर्थाद्ब्रह्म सत्यं जगदपि सत्यम्। जगद्ब्रह्मात्मकत्वाद् ब्रह्मणोऽभिन्नम्। त्रैरूपत्वस्य श्रुतिषु स्मृतिषु च श्रवण-स्मरणाभ्यां स्वरूपेण भिन्नत्वाद् भिन्नमपि। एवं ब्रह्मभिन्नाभिन्नं चेतनाचेतनात्मकं विश्वमिति। अयमेव स्वाभाविको भेदाभेदसिद्धान्तो वेदविद्भिः श्रीसनत्कुमार-नारदव्यासादिभिर्निर्णीतः।

ब्रह्मात्मकता - द्वैताद्वैततत्त्व

क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ, प्रकृति, पुरुष, क्षर, अक्षर आदि शब्दों से कहा जाने वाला चेतन अचेतन रूप सम्पूर्ण जगत् ब्रह्मात्मक है। परब्रह्म श्रीसर्वेश्वर प्रभु विश्व की अन्तरात्मा है। अतः सभी विज्ञान निश्चय से यथार्थक है। 'भोक्ता, भोग्य और नियन्ता' यह त्रिरूपता भी श्रुति व ब्रह्मसूत्रों से साधित होने के कारण यथार्थ ही है। अर्थात् ब्रह्म और जगत् दोनों सत्य हैं। जगत् ब्रह्मात्मक होने के कारण ब्रह्मा से अभिन्न है। त्रिरूपता श्रुति व स्मृतियों द्वारा भिन्न स्वरूप प्रतिपादित होने के कारण यह ब्रह्म से भिन्न भी है। इस प्रकार चेतनाचेतनात्मक जगत् ब्रह्म से भिन्न भी है और अभिन्न भी है (यह ही स्वाभाविक भेदाभेद (द्वैताद्वैत) सिद्धान्त है, जिसे वेदों के विद्वान् श्रीसनकादि देवर्षि श्रीनारद व महर्षि व्यास आदि ने निश्चित रूप से माना है।

Supernaturalactivity [duality & nonduality]

Explaination--

Real is this world all sentient and insentient,
Srutis and Smritis call it Vijnana or Brahman,

Real is the trinity of subject, object and instigator,
Thus sing the Sutras and all the scriptuures.

At one place the scriptures have propounded that all objects are inseparable from Brahma as being permeated by Him who, also, is the cause of creation, sustenance, and dissolution. At other place the scriptures speak of the functions of Brahma, Jivatma and Nature. Thus the universe is both separate and one with Brahma. This is known as dualnon dual (द्वैताद्वैत) Sidhant of Lord Nimbark.

(८)

नान्या गतिः कृष्णपदारविन्दात् संदृश्यते ब्रह्म-शिवादि-वन्दितात्।
भक्तेच्छयोपात्त-सुचिन्त्य-विग्रहादचिन्त्य-शक्तेरविचिन्त्यसाशयात्॥

गम्यतेऽनयेति करणव्युत्पत्या पुरुषार्थोपायभूतो भगवान् श्रीकृष्ण एव "गति-शब्दार्थः। गम्यत इति गतिरिति कर्मव्युत्पत्या प्राप्योऽपि श्रीकृष्ण एव। अतः श्रीकृष्णपदारविन्दाऽऽख्या गतिरेव परमा गतिः। क्षेत्रज्ञानां जीवात्मनां कर्तृत्वं परमपुरुषायत्तम् अतः क्षेत्रज्ञाऽऽख्या गतिर्न परमा गतिः। ब्रह्म-शिवादयोऽपि श्रीकृष्णमेव वन्दन्ते। अस्यैव शक्तिरचिन्त्या तर्कागोचरा वर्तते। भक्तानां नन्दगोपाऽर्जुनादीनामिच्छया बाल-विश्वरूपादि विग्रह श्रीकृष्णेनैव धारयितुं शक्यते। तदाशयस्याऽतिगूढत्वाद् आशयेन सह वर्तमानं साशयं (तात्पर्यं) ब्रह्मादिभिरप्यचिन्त्यम्। अतः श्रीकृष्णपदारविन्दादन्या गतिर्नास्ति।

सर्वज्ञः सर्व-रक्षा-समर्थः कारुण्य-वात्सल्यादि-गुण-सागरोऽपि श्रीकृष्णः प्रार्थनाशून्यैरात्म-पराङ्मुखैरप्रार्थितो न गोपायति, अन्यथा सर्वमोक्षप्रसङ्गः शास्त्र-मर्यादाभङ्गश्चाऽऽपद्येत। अतो हेतोः "त्वमेवोपायभूतो मे भव" इति प्रार्थनारूपा शरणागतिः श्रीकृष्णे प्रयुज्यतामिति भावः।

शरणागति

"गम्यतेऽनया" इस कारण-व्युत्पत्ति से पुरुषार्थोपायभूत भगवान् श्रीकृष्ण ही "गति" शब्द का अर्थ है। "गम्यते यः" इस कर्मव्युत्पत्ति से

प्राप्य भी श्रीकृष्ण ही है। अतः श्रीकृष्णपदारविन्द ही परम गति है। जीवों का कर्तृत्व भगवदधीन होने से क्षेत्रज्ञ (जीवात्माएँ) परम गति नहीं हो सकते। ब्रह्मा, शिव आदि देवता भी श्रीकृष्ण की ही वन्दना करते हैं। इनकी शक्ति अचिन्त्य है। यह तर्क का विषय नहीं बन सकती। नन्द गोपादि व अर्जुनादि भक्तों की इच्छा के अनुसार बालरूपादि व विश्वरूपादि श्रीविग्रह श्रीकृष्ण ही धारण कर सकते हैं। इनका आशय अतिगूढ होने से इनके तात्पर्य को ब्रह्मा, शिव आदि भी नहीं समझ सकते। अतः श्रीकृष्ण के पदारविन्द से अन्य कोई गति नहीं है।

सर्वज्ञ, सर्वरक्षासमर्थ, कारुण्य-वात्सल्यादि गुणों के सागर होते हुये भी श्रीकृष्ण आत्म-पराङ्मुख व प्रार्थनाशून्य जीवों की रक्षा नहीं करते, क्योंकि बिना प्रार्थना के भी इनकी रक्षा करें तो सभी का मोक्ष व शास्त्र मर्यादा भङ्ग भी हो जावेगा। अतः "आप ही मेरे उपाय है, मैं आपकी शरण में हूँ, मुझ पर कृपा करें" इस प्रकार प्रार्थना रूप शरणागति भगवान् श्रीकृष्ण में ही करनी चाहिये।

Submission

Explaination--

Except the lotus feet of Lord Sri Krsna,
Whose power and purpose are inconceivable,
Who assumes numberless divine Bodies for devotees,
Who is worshipped by Siva and Brahma, I see no other shelter.

The redemption of self is only possible through the meditation of the lotus feet of the Couple Radha Serveshwar, whom Brahma, Sheo and others saluteth and who assumes heart ravishing forms as aspired by His devotees and who also possesses unimaginable powers and unbounding splendours.

(९)

परा-अपरा भक्तिः

कृपास्य दैन्यादियुजि प्रजायते यया भवेत्प्रेमविशेषलक्षणा।
भक्तिर्ह्यनन्याधिपतेर्महात्मनः सा चोत्तमा साधनरूपिकाऽपरा॥

अस्य निरतिशय-स्वाभाविक-कारुण्य-वात्सल्य--क्षमा--सौहार्द-सत्यप्रतिज्ञात्वादि-गुणाब्धेः श्रीकृष्णस्य कृपा दैन्यादियुजि जीवे प्रजायते। प्रपत्त्युद्बोधिकया च यया भगवत्कृपयाऽनन्याधिपते रतिशयसाम्यानर्हस्वरूप-गुणादिकस्य महात्मनो या भक्तिर्भवति, सैव फलरूपा परा प्रेमलक्षणोत्तमा चेति। अनेक जन्मानुष्ठित-पुण्यपुञ्जोत्पन्ना या साधनजन्यत्वात् साधनरूपिका भक्तिरपरा।

भक्त्या भगवद्भावापत्तिलक्षणो मोक्षो जायते। अयं सायुज्यशब्दे-नाप्यभिधीयते। सायुज्यं च न स्वरूपैक्यम्, भेदश्रवणात् ''पृथगात्मानं प्रेरितारं च मत्वाजुष्टस्ततस्तेनाऽमृतत्वमेति'' इति श्रुतेः।

परा-अपरा भक्ति

कारुण्य, वात्सल्य, क्षमा, सौहार्द, सत्यप्रतित्व आदि गुणों के सागर भगवान् श्रीकृष्ण निरभिमानी शरणागत जीवों पर कृपा करते हैं। शरणागति के भाव को विशेष रूप से जागृत करने वाली जिस भगवत्कृपा से श्रीसर्वेश्वर प्रभु की जो भक्ति होती है, वह ही फलरूपा, प्रेमलक्षणा उत्तमा पराभक्ति है। अनेक जन्मों तक अनुष्ठित पुण्यकर्म व साधनों से उत्पन्न होने वाली साधनरूपिका अपरा भक्ति है।

भक्ति से भगवद्भावापत्ति स्वरूप मोक्ष होता है। इसे सायुज्य भी कहते हैं। इसमें स्वरूपैक्य नहीं होता। मोक्षावस्था में भी जीवात्मा व परमात्मा पृथक्-पृथक् ही रहते हैं।

Devotion { para-apara bhakti]

Explaination--

Lord bestows His grace on humble in heart,
By His grace alone one can gain divine love,
Two are the kinds of Bhakti of the Lord,
Unswerving and the initial practice of Bhakti

The Lord Radhe Sarveshwar showers graces on that devotee who possesses the attributes of humility, simplicity, charity and servitude. Being possessed by these qualities a devotee the tran-

scendental love of the couple. The other type of devotion is non-transcendental which is born of faith, association with saints and other practices performed by a devotee in the initial stages of bhaktu.

(१०)
अर्थपञ्चकज्ञानम्

उपास्य-रूपं तदुपासकस्य च कृपा-फलं भक्तिरसस्ततः परम्।
विरोधिनो रूपमथैतदाप्तेर्ज्ञेया इमेऽर्था अपि पञ्च साधुभिः ॥

१-उपास्यरूपं श्रीराधाकृष्णयुगलस्वरूपम् (चतुर्थ-पञ्चमश्लोकाभ्यां प्रतिपादितम्)। २-भगवत उपासको यो जीवात्मकदम्बकस्तस्य रूपम् (प्रथम-द्वितीय-श्लोकाभ्यां प्रतिपादितम्)। ३-भगवत्कृपाया मोक्षलक्षणं फलम् (नवम श्लोके संकेतितम्)। ४-भक्ते रसः प्रेमानन्दः। अर्थात् फलरूपा प्रेमविशेषलक्षणा पराभक्तिः। ५-अथ भगवत्प्राप्तेर्विरोधिनो रूपम्। यथा भगवदर्चाविग्रहेषु पाषाणलोहमयत्वाऽनीशत्वाऽचेतनत्वादिभावः, मन्त्रादौ शब्दसामान्यभावः, हरिकथासु लौकिकाख्यानसादृश्यकल्पनाप्रभृतयः। काम-क्रोध-लोभादयश्चेति। एते पञ्च पदार्था अपि साधुभिर्भक्तैरवश्यं ज्ञेया इति।

अर्थपञ्चक ज्ञान

१-उपास्य श्रीराधाकृष्णयुगलब्रह्म का स्वरूप। २-उपासक जीवात्मा का स्वरूप। ३-भगवान् की कृपा का मोक्ष रूप फल। ४-भक्ति का रस प्रेमानन्द। अर्थात् फलरूपा, प्रेमलक्षणा पराभक्ति। भगवत्प्राप्ति के बाधक विरोधी पदार्थों का रूप। यथा-भगवान् के श्रीविग्रह को पाषाण या लोहमय समझना, अनीश्वर व अचेतन की भावना करना, मन्त्रों को साधारण शब्द मानना, भगवत्कथा में लौकिक कहानियों जैसी कल्पना करना इत्यादि और काम, क्रोध लोभादि भी भगवत्प्राप्ति के विरोधी हैं।

भक्तजनों को उक्त पाचों पदार्थों का ज्ञान अवश्य करना चाहिये।

सुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य जगद्गरु

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य-प्रणीत--

॥ प्रातःस्मरण-स्तोत्रम् ॥

प्रातःस्मरामि युगकेलिरसाभिषिक्तं वृन्दावनं सुरमणीयमुदारवृक्षम् ।
सौरीप्रवाहवृतमात्मगुणप्रकाशं युग्मांघ्रिरेणुकणिकाञ्चितसर्वसत्त्वम् ॥१॥
प्रातःस्मरामि दधिघोषविनीतनिद्रं निद्रावसानरमणीयमुखानुरागम् ।
उन्निद्रपद्मनयनं नवनीरदाभं हृद्यानवद्यललनाञ्चितवामभागम् ॥२॥
प्रातर्भजामि शयनोत्थितयुग्मरूपं सर्वेश्वरं सुखकरं रसिकेशभूपम् ।
अन्योन्यकेलिरसचिन्हसखीदृगौघं सख्यावृतं सुरतकाममनोहरं च ॥३॥
प्रातर्भजे सुरतसारपयोधिचिन्हं गण्डस्थलेन नयनेन च सन्दधानौ ।
रत्याद्यशेषशुभदौ समुपेतकामौ श्रीराधिकावरपुरन्दरपुण्यपुञ्जौ ॥४॥
प्रातर्धरामि हृदयेन हृदीक्षणीयं युग्मस्वरूपमनिशं सुमनोहरं च ।
लावण्यधाम ललनाभिरुपेयमान-मुत्थाप्यमानमनुमेयमशेषवेषैः ॥५॥
प्रातर्ब्रवीमि युगलावपि सोमराजौ राधामुकुन्दपशुपालसुतौ वरिष्ठौ ।
गोविन्दचन्द्रवृषभानुसुतौ वरिष्ठौ सर्वेश्वरौ स्वजनपालनतत्परेशौ ॥६॥
प्रातर्नमामि युगलांघ्रिसरोजकोशमष्टाङ्गयुक्तवपुषा भवदुःखदारम् ।
वृन्दावने सुविचरन्तमुदारचिन्हं लक्ष्म्या उरोजधृतकुंकुमरागपुष्टम् ॥७॥
प्रातर्नमामि वृषभानुसुतापदाब्जं नेत्रालिभिः परिणुतं व्रजसुन्दरीणाम् ।
प्रेमातुरेण हरिणा सुविशारदेन श्रीमद् व्रजेशतनयेन सदाऽभिवन्द्यम् ॥८॥
सञ्चिन्तनीयमनुमृग्यमभीष्टदोऽहं संसारतापशमनं चरणं महार्हम् ।
नन्दात्मजस्य सततं मनसा गिरा च संसेवयामि वपुषा प्रणयेन रम्यम् ॥९॥

प्रातःस्तवमिमं पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
सर्वकालं क्रियास्तस्य सफलाःस्युः सदा ध्रुवा ॥१०॥

सुशदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य-प्रणीत--

।। वेदान्तकामधेनु - दशश्लोकी ।।

ज्ञानस्वरूपञ्च हरेरधीनं शरीरसेयोगवियोगयोग्यम् ।
अणुं हि जीवं प्रतिदेहभिन्नं ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्तमाहुः ।।१ ।।
अनादिमायापरियुक्तरूपं त्वेनं विदुर्वै भगवत्प्रसादात् ।
मुक्तञ्च बद्धं किल बद्धमुक्तं प्रभेदबाहुल्यमथापि बोध्यम् ।।२ ।।
अप्राकृतं प्राकृतरूपकञ्च कालस्वरूपं तदचेतनं मतम् ।
मायाप्रधानादिपदप्रवाच्यं शुक्लादिभेदाश्च समेऽपि तत्र ।।३ ।।
स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोष-मशेषकल्याणगुणैकराशिम् ।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ।।४ ।।
अंगे तु वामे वृषभानुजां मुदा विराजमानामनुरूपसौभगाम् ।
सखीसहस्रैः परिसेवितां सदा स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदाम् ।।५ ।।
उपासनीयं नितरां जनैः सदा प्रहाणयेऽज्ञानतमोऽनुवृत्तेः ।
सनन्दनाद्यैर्मुनिभिस्तथोक्तं श्रीनारदायाखिलतत्त्वसाक्षिणे ।।६ ।।
सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकं श्रुतिस्मृतिभ्यो निखिलस्य वस्तुनः ।
ब्रह्मात्मकत्वादिति वेदविन्मतं त्रिरूपताऽपि श्रुतिसूत्रसाधिता ।।७ ।।
नान्या गतिःकृष्णपदारविन्दात् संदृश्यते ब्रह्मशिवादिवन्दितात् ।
भक्तेच्छयोपात्तसुचिन्त्यविग्रहा-दचिन्त्यशक्तेरविचिन्त्यसाशयात् ।।८ ।।
कृपास्य दैन्यादियुजि प्रजायते यया भवेत्प्रेमविशेषलक्षणा ।
भक्तिर्ह्यनन्याधिपतेर्महात्मनः सा चोत्तमा साधनरूपिकाऽपरा ।।९ ।।
उपास्य रूपं तदुपासकस्य च कृपाफलं भक्तिरसस्ततः परम् ।
विरोधिनो रूपमथैतदाप्तेर्ज्ञेया इमेऽर्था अपि पञ्च साधुभिः ।।१० ।।

सुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य जगद्गरु

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य-प्रणीत--

॥ श्रीराधाष्टक-स्तोत्रम् ॥

नमस्ते श्रियै राधिकायै परायै नमस्ते नमस्ते मुकुन्द प्रियायै ।
सदानन्दरूपे ! प्रसीद त्वमन्तः प्रकाशे स्फुरन्ती मुकन्देन सार्धम् ॥१॥
स्ववासोपहारं यशोदासुतं वा स्वदध्यादिचौरं समाराधयन्तीम् ।
स्वदाम्नोदरे या बबन्धाशुनीव्या प्रपद्ये नु दामोदरप्रेयसीं ताम् ॥२॥
दुराराध्यमाराध्य कृष्णं वशे तं महाप्रेमपूरेण राधाऽभिधाऽभूः ।
स्वयं नाम कीर्त्या हरौ प्रेम यच्छ प्रपन्नाय मे कृष्णरूपे समक्षम् ॥३॥
मुकुन्दस्त्वया प्रेमडोरेण बद्धः पतङ्गो यथा त्वामनुभ्राम्यमाणः ।
उपक्रीडयन् हार्द्दमेवानुगच्छन् कृपा वर्तते कारयातो मयीष्टिम् ॥४॥
व्रजन्तीं स्ववृन्दावने नित्यकालं मुकुन्देन साकं विधायाङ्कमालम् ।
समामोक्ष्यमाणाऽनुकम्पाकटाक्षैः श्रियं चिन्तयेत्सच्चिदानन्दरूपाम् ॥५॥
मुकुन्दानुरागेण रोमांचिताङ्गैरहं व्याप्यमानां तनुस्वेद-बिन्दुम् ।
महाहार्दवृष्ट्या कृपापाङ्गदृष्ट्या समालोकयन्तीं कदा त्वां विचक्षे ॥६॥
यदंकावलोकं महालालसौघं मुकुन्दः करोति स्वयं ध्येयपादः ।
पदं राधिके ते सदा दर्शयान्त र्हृदिस्थं नमन्तं किरद्रोचिषं माम् ॥७॥
सदा राधिका-नाम जिह्वाग्रतः स्यात् सदा राधिकारूपमक्ष्यग्र आस्ताम् ।
श्रुतौ राधिकाकीर्त्तिरन्तः स्वभावे गुणा राधिकायाः श्रिया एतदीहे ॥८॥
इदं त्वष्टकं राधिकायाः प्रियायाः पठेयुः सदैवं हि दामोदरस्य ।
सुतिष्ठन्ति वृन्दावने कृष्णधाम्नि सखीमूर्तयो र्युग्मसेवानुकुला ॥९॥

*

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

द्वितीयावृत्ति : २०००

वि. सं. २०६८

मुद्रक :

श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

=

यौछावर

दश रुपये